vinetur

फ्रांस की बेलबाग योजना ने एस्का से निपटने के लिए उत्पादकों को दिए नए उपकरण

2.45 करोड़ यूरो की पहल से करीब 50 परियोजनाओं को वित्तपोषण मिला, लेकिन तने के रोग और बेलों के क्षय के अन्य दबाव अब भी व्यापक हैं

सोमवार, 9 नवंबर 2026



फ्रांस के अंगूर उत्पादकों को देश की राष्ट्रीय बेलबाग क्षय योजना के तहत एक दशक तक चले काम के बाद बेलों को प्रभावित करने वाले कुछ रोगों और क्षय के दबावों से निपटने के नए उपकरण मिले हैं, हालांकि नुकसान पर काबू नहीं पाया जा सका है।

Réussir Vigne की सोमवार, 9 नवंबर को प्रकाशित 10-वर्षीय समीक्षा के अनुसार, इस कार्यक्रम ने क्षेत्र को बेलबागों के क्षय का दस्तावेजीकरण करने से आगे बढ़कर खेतों में व्यावहारिक उपायों को आजमाने में मदद की है। यह पहल अप्रैल 2016 में पेरिस में शुरू की गई थी। उस समय वाइन उद्योग और सार्वजनिक प्राधिकरण तने के रोगों और बेलों के क्षय के अन्य कारणों में वृद्धि का समन्वित जवाब तलाश रहे थे, जिनसे उत्पादकों को लगातार बढ़ते नुकसान का सामना अकेले करना पड़ रहा था।

PNDV के नाम से जानी जाने वाली इस योजना का 2024 में नाम बदलकर राष्ट्रीय बेलबाग स्थिरता योजना कर दिया

गया। समीक्षा के अनुसार, आठ वर्षों में इसने उद्योग संगठनों और फ्रांसीसी राज्य से मिले कुल 24.5 मिलियन यूरो के बजट से करीब 50 शोध परियोजनाओं को सह-वित्तपोषित किया।

लेख के अनुसार, हाल के सबसे स्पष्ट लाभों में से एक एस्का से जुड़ा है। यह तने का जटिल रोग है, जो बेलों को कमजोर करता है और उन्हें मार भी सकता है। शोधकर्ता अब भी इस रोग के पीछे के सभी तंत्रों की पूरी व्याख्या नहीं कर पाए हैं, लेकिन नतीजों के एकत्र होने से ऐसा निर्णय-वृक्ष तैयार हुआ है, जिसका उपयोग उत्पादक पहले से बेलबागों में कर सकते हैं। इससे वाइन उत्पादकों को लक्षणों की निगरानी और खेतों में प्रतिक्रिया के तरीके तय करने के लिए अधिक व्यवस्थित आधार मिलता है।

काम का एक अन्य क्षेत्र flavescence dorée है, जो अंगूर की बेलों का गंभीर रोग है और जिसका फैलाव फ्रांस में अब भी चिंता का विषय है। समीक्षा के अनुसार, इसके प्रबंधन के उपकरणों को आधुनिक बनाया जा रहा है और खेतों में निरीक्षण आसान करने के लिए बनाया गया एक ऐप 2027 में काम करना शुरू कर सकता है। तेज़ और अधिक एकरूप पहचान न केवल उत्पादकों की लागत के लिहाज से, बल्कि बेलबागों की दीर्घायु और अंगूर की आपूर्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। रोग का दबाव पैदावार घटाए या दोबारा पौधे लगाने की नौबत लाए, तो ये कारक पूरे वाइन कारोबार पर असर डाल सकते हैं।

court-noué पर शोध से भी ऐसे नतीजे मिले हैं, जिनका उपयोग उत्पादक कर सकते हैं। यह बेलों का एक पुराना अध्ययन किया गया रोग है, जिसके लिए वर्षों तक अवलोकन करना पड़ता है। Réussir Vigne ने बताया कि शोध में देर से छंटाई को एक उपयोगी तरीका मान्य किया गया है। प्रकाशन के अनुसार, इस शोध से ऐसे रोपण सामग्री की मध्यम अवधि की संभावनाएं भी खुल रही हैं, जिसे पहले से प्रतिरक्षित किया गया हो या जो प्रतिरोधी हो ; हालांकि ये विकल्प अभी विकास के चरण में हैं और व्यापक व्यावसायिक उपयोग के लिए तैयार नहीं हैं।

समीक्षा ने स्पष्ट किया कि व्यापक समस्या अब भी बनी हुई है। योजना की घोषणा के दस साल बाद भी खेतों में बेलबागों का क्षय मौजूद है और जलवायु परिवर्तन ने पहले से कठिन स्थिति में और अधिक बार होने वाले जोखिम जोड़ दिए हैं। लेख ने इस कार्यक्रम को समस्या का इलाज नहीं बताया। इसके बजाय, उसने इसे ज्ञान, उपकरणों और नेटवर्क के क्रमिक विकास के रूप में पेश किया, जिनका उद्देश्य उत्पादकों को बेहतर फैसले लेने में मदद करना और शोध को रोज़मर्रा के बेलबाग प्रबंधन तक तेजी से पहुंचाना है।

शोध को व्यवहार में लाना योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। Réussir Vigne के अनुसार, संगठन ने नए समाधानों को उत्पादकों तक तेजी से पहुंचाने में मदद के लिए एक नवाचार मार्ग बनाया। इस पहल के तहत कंपनियों के दूसरे समूह का चयन किया जा रहा था। योजना ने फ्रांस के वाइन क्षेत्रों और तकनीकी विशेषज्ञताओं के बीच संवाद मजबूत करने के लिए 15 क्षेत्रीय दूतों का नेटवर्क भी स्थापित किया है।

लेख के अनुसार, कार्यक्रम ने शोध दलों, क्षेत्रों और विभिन्न विषयों को अक्सर अलग रखने वाली कुछ बाधाओं को दूर करने में भी मदद की है। व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ है कि जिन समस्याओं पर पहले अधिक बिखरे हुए ढंग से काम होता था, अब उनका अध्ययन बेलबाग क्षेत्र की व्यापक भागीदारी के साथ किया जा रहा है।

2024 से, योजना का स्थिरता की ओर झुकाव उसके समर्थन वाली परियोजनाओं में अधिक स्पष्ट हुआ है। Réussir Vigne के अनुसार, योजना के तहत चार परियोजनाओं को पहले ही लेबल मिल चुका था और 2026 की परियोजना-आह्वान प्रक्रिया के अतिरिक्त विजेताओं की घोषणा 2026 की शरद ऋतु में की जानी थी। ये नई परियोजनाएं केवल रोग नियंत्रण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह भी देखती हैं कि पर्यावरणीय दबावों के अनुकूल ढलते हुए बेलबागों को उत्पादक कैसे बनाए रखा जा सकता है।

जिन सवालों का अब अध्ययन किया जा रहा है, उनमें वाइन उत्पादन बनाए रखते हुए कार्बन भंडारण और पानी पर बायोचार के प्रभाव शामिल हैं। एक अन्य परियोजना का उद्देश्य हेज, पेड़ और तटबंध जैसी हरित अवसंरचना पर

व्यावहारिक सिफारिशें तैयार करना है। एक अलग पहल बेलों के रोगों में कवक खाने वाले भृंगों की भूमिका की जांच कर रही है।

पेय उद्योग के लिए इसका महत्व कृषि-विज्ञान से आगे तक जाता है। बेलों के रोग इस बात को प्रभावित करते हैं कि बेलबाग कितने समय तक उत्पादक बने रहेंगे, उत्पादकों को पौधों को बदलने और निगरानी पर कितना खर्च करना होगा, और एक मौसम से दूसरे मौसम तक अंगूर का उत्पादन कितना स्थिर रहेगा। रोग प्रबंधन या पौधों की सहनशीलता में कोई भी सुधार अंततः वाइन उत्पादकों को आपूर्ति सुरक्षित रखने और बेलबागों के लगातार होते नुकसान से लागत और योजना पर पड़ने वाले कुछ दबाव को घटाने में मदद कर सकता है।

समीक्षा ने बीते दशक को ऐसे दौर के रूप में बताया, जिसमें फ्रांस के वाइन क्षेत्र ने बड़ा वैज्ञानिक आधार तैयार किया और इस ज्ञान के एक हिस्से को खेतों में इस्तेमाल किए जा सकने वाले उपकरणों में बदलना शुरू किया। इससे यह भी जाहिर हुआ कि कार्यसूची का दायरा बढ़ रहा है और बेलबागों की स्थिरता के तहत रोग नियंत्रण, जलवायु के प्रति सहनशीलता, जैव विविधता और कार्बन प्रबंधन पर एक साथ अधिक ध्यान दिया जा रहा है।